एकमात्र सच्चा पाप

सिर्फ़ एक ही सच्चा पाप है—और वह है प्रभु यीशु मसीह पर अविश्वास। चोरी, चुगली, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, गाली देना, हत्या और ऐसे अन्य सारे पाप असली जड़ नहीं हैं; वे केवल उस एक पाप – अविश्वास – के परिणाम हैं।

सच्चे विश्वास को समझना

यीशु मसीह पर विश्वास करना केवल उनके बारे में पढ़ लेना या मन से निर्णय लेना नहीं है। सच्चा विश्वास एक व्यक्तिगत प्रकाशन से आता है—यह समझ कि यीशु कौन हैं, उनका दिव्य मूल, उनका मिशन, और संसार के लिए उनका महत्व क्या है। जब यह आत्मिक प्रकाशन होता है, तो यह विश्वास करने वाले के भीतर उनके साथ संगति में जीने की तीव्र इच्छा जगा देता है। इसके बिना, केवल बौद्धिक सहमति उद्धार के लिए पर्याप्त नहीं है।

पाप की जड़: अविश्वास

बाइबल स्पष्ट रूप से अविश्वास की गंभीरता बताती है:

यूहन्ना 3:17–18

“क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं
भेजा कि वह जगत को दोषी ठहराए, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, वह दोषी नहीं ठहरता; परन्तु जो विश्वास नहीं करता, वह तो दोषी ठहर चुका
है, क्योंकि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर
विश्वास नहीं किया।”

इस खंड से स्पष्ट है कि मसीह के आगमन का उद्देश्य दोषारोपण नहीं बल्कि उद्धार था। और उद्धार की शर्त है—यीशु मसीह पर विश्वास। बिना इस विश्वास के, मनुष्य पहले से ही दोष के अधीन है।

पाप: गहरे रोग का लक्षण

जैसे किसी मानसिक रोगी के बाहरी कार्य (काँच तोड़ना, लोगों को चोट पहुँचाना) केवल रोग का लक्षण होते हैं, वैसे ही चोरी, व्यभिचार, हत्या जैसे सारे पाप केवल एक गहरे आत्मिक रोग—अविश्वास और परमेश्वर से अलगाव—के लक्षण हैं।

यदि कोई केवल बाहरी व्यवहार बदलने की कोशिश करे और जड़ को न छुए, तो असफल होगा। असली परिवर्तन तभी संभव है जब हृदय को नया किया जाए।

यहेजकेल 36:26–27

“मैं तुम्हें नया हृदय दूँगा और तुममें नई आत्मा डालूँगा… और अपनी आत्मा तुम में दूँगा ताकि तुम मेरी विधियों पर
चलो।”

यीशु: पाप का एकमात्र उपचार

बाइबल सिखाती है कि केवल यीशु ही पाप की सच्ची औषधि हैं:

यूहन्ना 1:29

“देखो, यह तो परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले
जाता है।”

ध्यान दें—यहाँ “पाप” (एकवचन) कहा गया है, क्योंकि मूल पाप अविश्वास है। यीशु की बलिदानी मृत्यु उसी जड़ पाप को मिटाती है और सभी पापों की शक्ति को तोड़ देती है।

मनुष्य अपनी सामर्थ से नहीं बच सकता

कोई भी मानव प्रयास पाप पर पूरी विजय नहीं पा सकता। पौलुस लिखता है:

रोमियों 3:23 – “क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।”
रोमियों 6:23 – “क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।”

केवल यीशु, जो निष्पाप हैं (इब्रानियों 4:15 देखें), पूर्ण बलिदान देकर हमें नया जीवन देने में सक्षम हैं।

विश्वास के द्वारा विजय

संसार और पाप पर विजय केवल विश्वासियों को दी जाती है:

1 यूहन्ना 5:3–5

“परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें। और उसकी आज्ञाएँ कठिन नहीं हैं; क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह जगत पर जय पाता है। और वह विजय जिससे जगत पर जय पाई गई है, हमारा विश्वास है। संसार पर जय पाने वाला कौन है? केवल वही जो यह विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।”

विश्वास हमें पाप और संसार की शक्ति पर विजय देता है।

पश्चाताप और विश्वास का आह्वान

सुसमाचार सब जातियों में प्रचारित किया जाएगा, तब अन्त आएगा (मरकुस 13:10; मत्ती 24:14)।
आज जब आप यह संदेश पढ़ रहे हैं, यह आपके लिए परमेश्वर का अवसर हो सकता है। अविश्वास के परिणाम अनन्त हैं, लेकिन विश्वास का वरदान उद्धार और नया जीवन लाता है।

2 कुरिन्थियों 5:17

“इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है; पुरानी
बातें जाती रहीं; देखो, सब कुछ नया हो गया है।”

अंतिम प्रोत्साहन

इस सन्देश को दूसरों के साथ बाँटें और जहाँ भी अवसर मिले वहाँ यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें।
परमेश्वर आपको भरपूर आशीष दे

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP

GROUP....

Share on:
WhatsApp